

नदी के अपरदन चक्र को ही सामान्य अपरदन चक्र कहते हैं। अपरदन के मुख्य कारकों की अपेक्षा नदी का कार्य सर्वाधिक व्यापक, दृष्टिगोचर व महत्वपूर्ण होता है। नदी का अपरदन चक्र तभी शुरू होता है जबकि कोई भी भूभाग समुद्र तल से ऊपर उठता है। अपरदन तब तक चलता है जब तक कि वह भूभाग आधा तल को प्राप्त नहीं हो जाता है। इस प्रकार किसी भी भूखण्ड को अपने उत्थान से आधा तल तक पहुँचाने में कई अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है।

- 1) Youth Stage युवावस्था
- 2) Mature Stage प्रौढ़ावस्था
- 3) Old Stage वृद्धावस्था

उत्थान का मानना है कि सागर से शुष्क की आकृति की तरह ऊपर उठती है। धरातल के ऊपर उठने के लक्ष्य-साथ अपरदन क्रिया चलती रहती है पन्द्रह उन्नयन के अनुसार उत्थान कार्य पूर्ण होने के बाद अपरदन शुरू होती है। स्थानीय भागों से भूभाग के उत्थान के बाद नदियों का अक्रिय होना है जो ढाल के अनुसार कहती हैं और अपरदन करती हैं।

1) Youth Stage / युवावस्था : जब नदियाँ ढाल का अनुसरण करती हैं तो अनुवर्ती नदियाँ कहलाती हैं। पर्वतीय भागों से नदियाँ निकलकर ढाल का अनुसरण करने लगती हैं। इस अवस्था में नदियाँ कम व छोटी होती हैं। धीरे-धीरे नदियाँ घाटियों का निर्माण करना प्रारंभ करती हैं। घाटियाँ गहरी व संकीर्ण होती हैं जिसे V-आकार की घाटी कहते हैं। युवावस्था में निम्नलिखित घटनाएँ होती हैं या अन्तःक्रियाएँ विकसित होती हैं -

- a) Gorge महाखड्ड
- b) V-shaped valley V-आकार की घाटी
- c) Waterfall जलप्रपात
- d) Plunge Pool अवतमनकुण्ड
- e) River Piracy/capture च. सरिता अपहरण

ii) प्रौढ़ावस्था / Mature Stage : जब नदियाँ पर्वतीय भागों से उत्थान भेदनी भागों में पहुँचती हैं तो प्रौढ़ावस्था कहलाती है। इस अवस्था में ढाल कम होने के कारण अपरदन भी धीमा हो जाता है तथा निक्षेपण कार्य शुरू हो जाता है। नदी का गहरा होना रुक जाता है और घाटी की चौड़ाई बढ़ने लगती है। निक्षेपण से निम्नलिखित आकृतियाँ इस अवस्था में बनती हैं -

- a) Alluvial Fan जलोढ़ पंख
- b) Alluvial cone जलोढ़ शंकु
- c) Pediment plain पर्वतपदीय मैदान

- d) Oxbow Lake गोखुर झील
 e) Flood plain बाढ़ का मैदान
 f) Levee तटबंध
 g) Meanders विसर्प

iii) जीर्णवस्था/वृद्धावस्था/ Old stage : इस अवस्था में नदियों का ढाल न के बराबर होता है अर्थात् समुद्र तल के करीब पहुँच जाता है। नदियाँ अपने आधात तल को प्राप्त करने लगती हैं। अपरदन लगभग समाप्त हो जाता है। सारा अवसाद जमा होने लगता है। नदियाँ कई धाराओं में बंटने लगती हैं जिसे वितरणिका कहते हैं। अंततः नदियाँ समुद्र में समाहित हो जाती हैं। इस अवस्था की विशेषताएँ निम्न लिखित हैं:-

- a) Tributaries वितरणिकाएँ
 b) Delta and Delta plain डेल्टा व डेल्टामैदान
 c) Estuary ज्वानदमुख

इस प्रकार इस अपरदन चक्र के पूरा होने पर संपूर्ण व्यस्ततल एक समतल समप्राय मैदान में परिणत हो जाता है जिसे Penplain कहते हैं। यदि किसी कारणवश या भू हलचल के कारण नदियों के मार्ग में उल्लान या अवनमन होता है तो एक नया अपरदन चक्र शुरू होता है और इस घटना को Rejuvenation/नवोन्मेष कहते हैं।

